प्रातःक्लास पिताश्री ओमशांति 2.11.67

रिकार्ड– दूर देश का रहने वाला ..... ओमशांति। रुहानी बाप बैठ रुहानी बच्चों को समझाते हैं। भारत खास और दुनियां आम सभी विश्व में शांति चाहते हैं। अब यह तो समझना चाहिए जरूर विश्व का मालिक ही विश्व में शांति स्थापन कर सकता है। गॉड फॉदर को ही पुकारना चाहिए कि आकर विश्व में शांति फेलाओ। किसको पुकारें वह भी बिचारों को पता नहीं। सारी विश्व की बात है ना। विश्व में शांति चाहते हैं। अब शांति का धाम तो अलग है, जहां बाप और आत्माएं रहती हैं। यह भी बेहद का बाप ही समझाते हैं। विश्व सारी दुनिया को कहा जाता है। अब इस दुनियां में ढेर के ढेर मनुष्य हैं। अनेक धर्म हैं। कहते हैं एक धर्म हो जाये तो शांति हो जाए। सभी धर्म मिलकर एक हो नहीं सकते। त्रिमूर्ति की भी महिमा है। त्रिमूर्ति का चित्र बहुत करके रखते हैं। यह भी जानते हैं ब्रह्मा द्वारा स्थापना। किसकी?सिर्फ शांति की थोड़े ही होगी। शांति और सुख की स्थापना होती है। इस भारत में ही 5000वर्ष पहले जब इनका राज्य था तो जरूर बाकी सब जीवआत्माएं जीव को छोड़ अपने घर गई होंगी। अब चाहते हैं एक धर्म, एक राज्य ,एक भाषा हो। अब तुम जानते हो बाप सुख, शांति ,सम्पत्ति की स्थापन हो रहा है। यह कोई नई बात नहीं। अनेक बार एक राज्य की स्थापना हुई है। फिर अनेक धर्मों की वृद्धि होते2 झाड़ बड़ा होता जाता है। फिर बाप को आना पड़ता है। अब तुम बच्चे सम्मुख बैठे सुन रहे हो। और बच्चे सुनेंगे। रुहानी बाप से बच्चे सुन रहे हैं। अपन को आत्मा समझना है। आत्मा ही सुनती है। पढ़ती है। आत्मा में संस्कार हैं। हम आत्मा भिन्न2 शरीर धारण करती हैं। बच्चों को इस निश्चय बुद्धि होने में ही बड़ी मेहनत लगती है। कहते हैं बाबा घड़ी2 भूल जाते हैं। बाप समझाते हैं यह भूल–भुलईया का खेल है। इसमें तुम जैसे फंस गए हो। पता नहीं है हम अपने घर अथवा राजधानी में कैसे जावेंगे?अब बाप ने (समझाया) है। तुम समझते हो आगे हम कुछ नहीं जानते थे। हम कहां से आये हैं, कैसे पार्ट बजाते हैं ,फिर वापस कैसे जावेंगे कुछ भी पता न था। पत्थर बुद्धि थे। आत्मा कितनी पत्थर बुद्धि बन जाती है। पत्थर बुद्धि और पारस बुद्धि का गायन भारत में ही है। पत्थर बुद्धि राजायें और पारस बुद्धि राजायें यहां ही हैं। पारसनाथ का मंदिर भी है। अभी तुम समझते हो हम आत्माएं कहां से आये हैं पार्ट बजाने। आगे तो कुछ भी नहीं जानते थे। जैसे जनावर बुद्धि थे। इनको कहते हैं कांटों का जंगल। यह सारी दुनियां कांटों का जंगल है। फूलों के बगीचे को आग लगे ऐसा कब सुना नहीं। हमेशा जंगल को आग लगती है। बहुत बड़ी आग लगती है। यह भी जंगल है। इनको आग लगनी है जरूर। भंभोर को आग लगनी है। सारी दुनियां को भंभोर कहा जाता है। अभी तुम बच्चों ने बाप को जान लिया है। सम्मुख बैठे हो। तुम्हीं से बैठूं, तुम्हीं से खाउं, तुम्हीं से पढ़ें। वह सब कुछ हो रहा है। भगवानुवाच बच्चों प्रति ही होगा ना। तुम जानते हो भगवान पढ़ाते हैं। निराकार शिव को ही भगवान कहेंगे। शिव की पूजा भी यहां होती है। सतयुग में पूजा आदि नहीं होती। बाप ने समझाया है यह सब खेल बना हुआ है। उनकी आयु है 5000वर्ष। तुम समझाते हो अब सतयुग की फिर से स्थापना हो रही है। कलियुग की आयु पूरी होती है तो भी मनुष्य इतना घोर अंधियारे में हैं। समझते नहीं। कह देते कलियुग की आयु तो लाखों वर्ष है। अज्ञान है ही घोर अंधियारा। भक्ति को अज्ञान कहा जाता है। तब ही भक्त भगवान को याद करते हैं। सतयुग–त्रेता में भक्ति होती नहीं। याद भी नहीं करते। भक्तों को सतयुगी राजधानी का फल मिलता है। तुम समझते हो हमने सबसे जास्ती भक्ति की है। इसलिए हम ही पहले2 बाप के पास आये हैं। फिर हम ही राजधानी में आवेंगे। तुम बच्चों को पूरा पुरुषार्थ करना चाहिए। नई दुनियां में उंच पद पाना है। बच्चों की दिल होती है हम जल्दी अपने घर जावेंगे। शुरू में ही नया घर होगा। फिर पुराना होता जावेगा। घर में बच्चों की वृद्धि होती जावेगी। पुत्र,परपोत्रे,तत्पोत्रे, वह तो पुराने ही में आवेंगे।

कहेंगे हमारे दादा ने परदादा का यह मकान बनाया हुआ है। पीछे आने वाले बहुत होते हैं। जितना जोर से पुरुषार्थ करेंगे तो वह पहले नये घर में जावेंगे। पुरुषार्थ की युक्ति बाप बहुत सहज समझाते हैं। भक्ति में भी पुरुषार्थ करते हैं ना। बहुत भक्ति करने वालों का ही नाम बाला होता है। कई2 भक्तों की स्टैम्प्स भी निकालते हैं। ज्ञान की माला का तो कोई को पता ही नहीं। पहले है ज्ञान ,पीछे है भक्ति। यह तुम बच्चों की बुद्धि है। आधा समय है ज्ञान सतयुग–त्रेता। अब तुम बच्चे नालेजफुल बनते हो। टीचर पास तो नालेज है ही। टीचर हमेशा फुल नालेज वाले ही होते हैं। स्टुडेंट में नम्बरवार मार्क्स उठाते हैं। टीचर पास तो फुल नालेज है। यह है बेहद का टीचर। तुम हो बेहद के स्थुडेंट। तो जरूर नम्बरवार ही पास होंगे। जैसे कल्प पहले हुए हैं। बाप समझाते हैं तुमने ही 84जन्म लिए हैं। 84जन्मों में 84फीचर्स होते हैं। पुनर्जन्म तो जरूर लेना ही है ना। जन्म लेते ही नीचे उतरते आते हो। पहले जरूर सतोप्रधान दुनियां होती है। फिर पुरानी तमोप्रधान दुनियां होती जाती है। मनुष्य भी तमोप्रधान होंगे ना। अभी तुम इस सृष्टि चक्र को जान गए हो। झाड़ भी पहले नया सतोप्रधान होता है। नये पत्ते बहुत अच्छे होते हैं। यह तो बेहद का झाड़ है। ढेर धर्म हैं। तुम्हारी बुद्धि अब बेहद तरफ जावेगी। कितना बड़ा झाड़ है। पहले2 आदि सनातन देवी देवता धर्म ही होगा। फिर वैराइटी धर्म आवेंगे। तुमने ही 84वैराइटी जन्म लिए हैं। वह भी अविनाशी हैं। तुम जानते हो कल्प2 हम 84 का चक्र (फिराते) रहते हैं। 84के चक्र में हम ही आते हैं। 84लाख जन्म कोई कोई मनुष्य की आत्मा नहीं लेती है। वह तो वैराइटी जनावर आदि ढेर हैं। उनकी तो कोई गिनती भी नहीं कर सकते। मनुष्य की आत्मा ने 84जन्म लिए हैं। तो भी पार्ट बजाते2 एकदम जैसे कि थक गए हैं। दुःखी बन गए हो। सीढ़ी उतरते सतोप्रधान से एकदम तमोप्रधान बन गए हो। बाप फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं। बाप कहते हैं मैं तमोप्रधान शरीर,तमोप्रधान दुनियां में आता हूं। अभी सारी तमोप्रधान दुनियां है। मनुष्य तो ऐसे ही सिर्फ कह देते हैं सारे विश्व में शांति कैसे हो। समझते नहीं हैं कि विश्व में शांति कब थी। बाप कहते हैं तुम्हारे घर में तो चित्र रखे हैं ना। इनका (ल.ना.) राज्य था तो सारे विश्व में शांति थी। उनको स्वर्ग कहा जाता था। नई दुनियां को ही हैविन गोल्डेन एज कहा जाता है। अभी यह पुरानी दुनियां बदलती है। यह राजधानी स्थापन हो रही है। विश्व में राज्य तो इनका ही था। लक्ष्मी–नारायण के मंदिर में बहुत मनुष्य आते हैं। यह थोड़े ही किसकी बुद्धि में है कि यह भारत के मालिक थे। इनके राज्य में जरूर सुख–शांति होगा। 5000वर्ष की बात है। जब इनका राज्य था। 5000वर्ष का ही यह चक्र है। आधा कल्प के बाद पुरानी दुनियां कहा जाता है। इसलिए धंधेवाले लोग स्वस्तिका रखते हैं चौपड़ी में। इनका भी राज़ है ना। वह तो गणेश कह देते हैं। गणेश को देवता समझते हैं। अब वह कोई देवता है थोड़े ही। 4भाग पूरे दिखाते हैं। अब बाप बच्चों को समझाते हैं अपन को आत्मा समझ सुन रहे हो। आत्मा समझ सुनेंगे तो खुशी भी रहेगी। बाप हमको पढ़ाते हैं। भगवानुवाच भी है ना। भगवान तो एक ही होता है निराकार। जरूर वह आकर शरीर लेता होगा तब भगवानुवाच कहा जाता है। यह भी किसको पता नहीं हैं। तब तो नेति2 करते हैं। कहते हैं वह परमपिता है। फिर कह देते हम नहीं जानते। कहते हैं शिवबाबा ब्रह्मा को भी बाबा कहते हैं। विष्णु को कब बाबा कहते सुना?प्रजापिता तो बाबा ठहरा ना। तुम हो ब्रह्माकुमारियां। प्रजापिता नाम न होने से समझते नहीं हैं। इतने ढेर ब्रह्माकुमारियां हैं तो जरूर प्रजापिता ही होगा। इसलिए प्रजापिता अक्षर जरूर डालो। तो समझेंगे प्रजापिता तो हमारा भी बाप ठहरा। नई सृष्टि जरूर प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ही रची जाती है। हम आत्माएं भाई2 हैं। फिर शरीर धारण कर भाई–बहन बनते हैं। बाप के बच्चे तो अविनाशी ही हैं। फिर साकारी बहन–भाई चाहिए। तो नाम है प्रजापिता ब्रह्मा ; परंतु ब्रह्मा को कोई हम याद नहीं करते। याद लौकिक को करते

और फिर पारलौकिक को करते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा को याद नहीं करते। दुःख में सुमिरण बाप को करते हैं। ब्रह्मा को नहीं। कहेंगे हे भगवान। हे ब्रह्मा नहीं कहेंगे। सुख में तो किसको भी याद नहीं करते। वहां सुख ही सुख है। यह भी किसको पता नहीं। तुम जानते हो इस समय हैं तीन बाप। भक्तिमार्ग में लौकिक–पारलौकिक बाप को याद करते हैं। सतयुग में सिर्फ लौकिक बाप को याद करते हैं। संगम पर तीनों बाप को याद करते हो। लौकिक भी है ;परंतु जानते हैं वह है हद का बाप। उनसे हद का वर्सा मिलता है। अभी हमको बेहद का बाप मिला है, जिससे बेहद का वर्सा मिलता है। यह समझ की बात है। अभी बेहद का बाप आये हैं ब्रह्मा के तन में हम बच्चों को बेहद का सुख देने। उनका बनने से हम बेहद का वर्सा पाते हैं। यह जैसे डाडे का वर्सा मिलता है। वह कहते हैं वर्सा तुमको मैं देता हूं। पढ़ाता हूं। ज्ञान मेरे पास है। बाकी न मनुष्यों में ज्ञान है, न देवताओं में ज्ञान है। मेरे (में) ज्ञान है जो मैं बच्चों को देता हूं। यह है रुहानी ज्ञान। तुम जानते हो रुहानी बाप द्वारा हमको यह पद मिल रहा है। ऐसे विचार–सागर–मंथन करना है। यह2 प्वाइंट्स हम कैसे लिखें, जो मनुष्य समझे कि बरोबर परमपिता परमात्मा फिर से भारतवासियों को स्वर्ग बनाते हैं। स्वर्ग का राज्य देते हैं। राज्य था तो सही ना। कब था, इतनी सहज बात भी सभी भूल गए हैं। तुमने ही राज्य पाया था। अब गंवाया है। गायन भी है मन ते जीते जीत है, मन ते हारे हार। वास्तव में कहना चाहिए माया पर जीत ;क्योंकि मन को तो जीतना नहीं है। मनुष्य कहते हैं मन की शांति कैसे हो? बाप कहते हैं कि आत्मा कैसे कहेगी कि मन की शांति हो। आत्मा तो है ही शांतिधाम में रहने वाली। आत्मा जब शरीर में आती है तब कर्म करने लगती है। बाप कहते हैं तुम स्वधर्म में टिको। अपन को आत्मा समझो। आत्मा का स्वधर्म है ही शांत। जब यह आरगन्स मिलती है तब ही आत्मा कर्म करती है। बाकी शांति कहां से ढूंढेंगे। इस पर रानी का मिसाल देते हैं। हार गले में पड़ा है और ढूंढते थे बाहर। सन्यासी दृष्टांत देते हैं और फिर खुद जंगल में जाय शांति ढूंढते हैं। बाप कहते हैं तुम आत्मा का स्वधर्म ही शांत है। शांतिधाम तुम्हारा घर है जहां से पार्ट बजाने तुम आते हो। शरीर से फिर कर्म करना पड़ता है। शरीर से अलग होने से फिर सन्नाटा हो जाता है। आत्मा ने जाय दूसरा शरीर लिया। फिर चिंता क्यों करनी चाहिए?वापस थोड़े ही आवेंगे ;परंतु मोह सताता है। वहां तुमको मोह नहीं सतावेगा। वहां 5विकार होते नहीं। रावणराज्य ही नहीं। वह है रामराज्य। हमेशा रावणराज्य हो तो फिर मनुष्य थक जाये। कब सुख देख न सके। अभी तुम आस्तिक बने हो और त्रिकालदर्शी भी बने हो। मनुष्य बाप को नहीं जानते। इसलिए नास्तिक कहा जाता है। भक्तिमार्ग में मनुष्य बहुत विकारी बन जाते हैं। इसलिए उन्होंको रोचक बातें सुनाने लिए फिर गरुड़ पुराण में लिखा है। है कुछ भी नहीं। आजकल गरुड़ पुराण कम सुनाते हैं। आगे बहुत सुनाते थे। तो मनुष्यों को डर रहे। अभी तुम समझते हो इस समय के मनुष्य मात्र बिच्छू–टिंडन बन पड़े हैं , जो एक/दो को डसते रहते हैं। इसलिए सन्यासी तो भाग जाते हैं। सन्यासी हैं हठयोगी। वह कब राजयोग सिखलाय न सकें। जो अच्छे बुजुर्ग हैं वह सन्यासियों को भी समझाय सकते हैं कि तुम राजयोग सिखलाय नहीं सकते। तुम्हारा धर्म ही बाद में स्थापन होता है। हठयोग और राजयोग में रात–दिन का फर्क है। वह हठयोगी हैं डुबोने वाले। तुमको बाप उपर ले जाने आये हैं। कितना फर्क है। अभी तुम बच्चे जानते हो यह शास्त्र आदि जो भी पास्ट हो चुके हैं यह सब हैं भक्तिमार्ग। अभी तुम हो ज्ञानमार्ग में। बाप तुम बच्चों को कितना प्यार से नयनों पर बिठाय ले जाते हैं। गले का हार बनाय सबको ले जाता हूं। पुकारते भी सब हैं। जो काम चिक्षा पर बैठ काले हो गए हैं उनको ज्ञान चिक्षा पर बिठाय हिसाब–किताब चुक्तू कराय वापस ले जाते हैं। अब तुम्हारा काम है पढ़ने से। और बातों में क्यों जाना चाहिए?कैसे मरेगा?क्या होगा?इन बातों में हम क्यों जावें?यह तो कयामत का समय है। सभी हिसाब–किताब चुक्तू कर

वापस चले जावेंगे। यह बेहद का ड्रामा का राज़ तुम बच्चों की ही बुद्धि में है। और कोई नहीं जानते। तुम बच्चे जानते हो हम बाबा के पास आये हैं। कल्प2 आते हैं। बेहद के बाप से वर्सा लेने। हम जीव की आत्माएं आई हैं। हम जीव की आत्माएं आई हैं। बाबा ने भी आकर जीव में प्रवेश किया है। बाप कहते हैं मैं साधारण तन में आता हूं। इनको भी बैठ समझाता हूं कि तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। अब तुम जानते हो कैसे बाप ने प्रवेश किया है। और कोई भी ऐसे कह न सके कि बच्चों आत्मअभिमानी होकर बैठो। बाप को याद करो। यह महाभारत लड़ाई भी वही है। अनेक धर्म भी हैं। सब पतित बन गए हैं। अब फिर बाप पावन बनने की युक्ति बताते हैं। तुमसे कोई पूछे कि तुम शास्त्रों को मानते हो?बोलो एक है ज्ञान ,दूसरी है भक्ति। यह शास्त्र आदि सब भक्तिमार्ग के हैं। ये शास्त्र आदि तो सब जन्म जन्मांतर पढ़ते आये हैं। अब हमको बाप ज्ञान दे रहे हैं। भक्ति के बाद है ज्ञान। अभी बाप हमको अपना परिचय भी दे रहे हैं और सृष्टि के आदि,मध्य,अंत का राज भी समझाते हैं। जिससे हम स्वदर्शनचक्रधारी बन जाते हैं। आत्मा को सृष्टि के आदि,मध्य और अंत का ज्ञान होता है। ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। हम भक्ति को भी मानते हैं। अभी हमको ज्ञान मिल रहा है तो यह भक्ति छूट जाती है। ज्ञान से सदगति होती है। भक्ति से दुर्गती होती है। ज्ञान को दिन कहा जाता है। यह है विकारी दुनियां जहां असुर रहते हैं। वहां है निर्विकारी दुनियां। भारतवासियों को यह भूल गया है कि हम ही देवता थे। फिर 84जन्म ले यहां तक आय पहुंचते हैं। भारत है अविनाशी खंड। फिर नई दुनियां होगी। अब देखो विनाश के लिए कितनी तैयारियां हो रही हैं। विनाश के लिए कितना खर्च करते हैं। खर्च करना चाहिए राजाई पाने लिए। फिर विनाश लिए खर्च कर रहे हैं ;क्योंकि तुमको नई दुनियां चाहिए। यह है ही पढ़ाई। है नई दुनियां के लिए। उसको अमरलोक कहा जाता है और इनको मृत्युलोक कहा जाता है। तुम सब पार्वतियां हो। बाप अमरनाथ तुमको अमर ननेलिए अमरकथा सुनाय रहे हैं। भगवानुवाच मैं तुमको मनुष्य से देवता बनाता हूं। मृत्युलोक से अमरलोक में जाता हूं। वाया शांतिधाम। तुम बच्चे ही (कह) सकते हो बाबा फिर से यह राज्य स्थापन करते हैं। ऐसे और कोई मुख से कह न सके। तुम्हारी यह है एम ऑब्जेक्ट। आदि सनातन देवी देवता धर्म की सीापना हो रही है। इसलिए पहले2 यह चित्र है मुख्य। गीता का भगवान कौन है यह भी साथ रखना चाहिए। यह विश्व के मालिक कैसे बने। बाप ने इन्हों को राज्य दिया था। यह भी बच्चे समझते हैं यह फुल पास हुए हैं। इन्हों के मां–बाप कम पास हुए हैं। इसलिए उन्हों का इतना नाम नहीं है। इनका नाम कितना बाला है। फर्स्ट प्रिंस ऑफ न्यू वर्ल्ड। अच्छा आज भोग है। बच्चों को समझाया है यह भी ड्रामा है। कदम व कदम जो पास होता है वह ड्रामा। यह पितर आदि खिलाना भक्तिमार्ग की रसम भी ड्रामा में नूंध है। सतयुग में पितरों को नहीं बुलाते। वहां तो सदैव सुखी रहते हैं। यहां पितरों को बुलाते हैं फिर उनको खिलाते हैं। यह तो जानते हैं शरीर बिगर आत्मा कुछ भी स्वीकार नहीं करती। भावना होती है शरीर तो खतम हो जाता है। बाकी आत्मा है अविनाशी। बंगाली मछली खाने वाले होंगे तो ब्राह्मण को भी मछली खिलाते हैं। समझते हैं नहीं तो आत्मा तृप्ति नहीं होगी। यह सब है रसम–रिवाज। भक्तिमार्ग में जो कुछ कर चुके हैं सो ड्रामाअनुसार फिर भी होगा। इन बातों में मूंझने की दरकार नहीं। ड्रामा में नूंध है। इसको मिटाय नहीं सकते। बाप कते हैं मैं भी ड्रामा अनुसार अपने समय पर ही आता हूं। कल्प2 जो पार्ट बजाया है वही बजाता हूं। मेरा पार्ट ही पतितों को पावन बनाना। पावन बनने लिए पुरुषार्थ करना है। पुरुषार्थ बिगर कुछ भी नहीं मिलेगा। अच्छा।

वास्तव में सच्ची दीवाली याद की यात्रा ही है, जिससे आत्मा की ज्योत 21जन्मों लिए जग जाती है। बहुत2 कमाई होती है। तुम्हारा नया खाता है नई दुनियां के लिए। 21जन्मों लिए अब खात जमा करना है। अच्छा, मीठे2 रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बापदादा का .....दीवाली के दिन गुडमार्निंग।